आत्मा ही पढ़ाती है न। फिर कहेंगे उनका नाम फलाना है। आत्मा ही टीचर है न। आत्मा सुनती है। आत्मा संस्कार धारण करती है। परन्तु देहअभिमान के कारण समझते नही है। वहाँ भी समझेंगी हम आत्मा को भी शरीर मिला है। अब वृध अवस्था हुई है। झट सा० होगा अभी हम यह पुराना चोला छोड़ नया लेते है। भ्रमरी का मिसाल भी अभी का है। तुम ब्राह्मणियां हो। तुम जानती हो यह सब विष्टा के कीड़े है। ग्रन्थ में भी है न अशब चोर हराम खोर· · ·· विकार को भार (गन्द) भी कहते है। विष्टा के कीड़े है न। तो अब तुम समझते हो हम ब्राह्मणियां है। ड्रामा प्लेन अनुसार जो भी तुम्हारे पास आते है उन पर भूं भूं करते है फिर उनमे भी कोई कच्चे, कोई सड़ जाते है। सन्यासी लोग तो यह मिसाल दे न सके। वह थोड़े ही आपसमान बनावेंगी। तुम्हारे तो एम आब्जेक्ट खड़े है। कथायें भी सब तुम्हारे है। सत्य नारायण की कथा अमरकथा यह है एक बाप ही सत्य बताते है। बाकी सब है झूठ। सत्यनारायण की कथा कितनी सुनते है भोग भी होता है। यहाँ तुमको रोज़ सत्य ना० की कथा सुनाकर भोग खिलाते रहते है। कहाँ वह हद की बातें कहाँ यह बेहद की बातें। तुम बच्चों को बाप डायरेक्शन देते रहते है तुम नोट करते रहते हो। बाकी किताब शास्त्र आदि तो सब खत्म हो जावेंगी। पुरानी कोई चीज़ नही रहेगी। मनुष्य समझते है कलयुग में अजुन 40 हजार वर्ष पड़े है। इसलिए बाम्बे में कितनी बड़ी पीढे लगाते रहते है। कितना खर्चा करते है। क्या समुद्र छोड़ देगी। एक ही लहर से हप कर लेगी। बाम्बे थी थोड़े ही, फिर न रहेगी। अभी 100 वर्ष के अन्दर यह बिजली गैस आदि सब निकली है। आगे तो शमा जलाते थे। अभी तो क्या 2 निकला है। आगे तो वाइसराय भी 4 घोड़े की गाड़ी पर आते थे। अब तो थोड़े समय में क्या 2 होगया है। स्वर्ग तो बहुत छोटा गाँव होता है। नदी के किनारे बहुत थोड़े रहते है तो अब तुम बच्चों पर है ब्रहस्पति की दशा। बच्चों को खुशी होनी चाहिए न। हम इतने साहूकार बनते है। कोई दिवाला मारते है तो राहू की दशा कहा जाता है। तुम अपनी दशा पर हर्षित रहो भगवान बाबा हमको पढ़ाते है। भगवान कब किसको पढ़ाते है क्या। तुम बच्चे जानते हो हमारी यह स्टूडेन्ट लाइफ दी बेस्ट है। हम नर से नारायण विश्व के मालिक बनते है। यहाँ हम रावण राज्य में आकर फसे है। फिर जाते है सुखधाम। तुम हो संगमयुगी ब्राह्मण। ब्रह्मा द्वारा स्थापना होती है न। एक थोड़े ही होगा। बहुत चाहिए न। तुम खुदाई खिज़मतगार बनते हो। खुदा जो खुद मत करते है स्वर्ग स्थापन करने की उसमें तुम मददगार हो। जो जास्ती मदद करेगी वह ऊँच पद पावेगी कब कोई भूख नही मर सकते। यहाँ फकीर लोग है उन्हों की भी जाँच करते है तो हजारों रुपये निकल आते है। भूख कोई मर न सके। बाप के आकर बने पहले तो जब बाबा भूखा मरे तब बच्चे मरें। बाप गरीब होते है बच्चों को जब तक न मिले तो खुद भी खाते नही है। क्योंकि बच्चे वारिस है न। तो उनपर लव रहता है। वहाँ तो गरीबी की बात नही होती। अथाह अनाज रहता है, पैसे की बात नही। बेहद की साहूकारी रहती है। वहाँ की पहरवाइस देखो कैसी है। इसलिए बाबा कहते है जब भी फुर्सत मिले तो ल० ना० के चित्र सामने आकर बैठो। रात को भी यहाँ आकर सो सकते हो इन ल० ना० को देखते 2 सो जाओ। ओहो। बाबा से हम यह बनते है। तुम करके देखो कितना मज़ा आता है। फिर सुबह को उठ अनुभव सुनावेंगी बाबा की याद में आकर सो सकते हो। ल० ना० के चित्र सीढी के चित्र हर एक के पास जाना चाहिए। स्टूडेन्टस यह तो जानते है हमको कौन पढ़ाते है। उनका भी चित्र तो है। न हो तो भी हर्जा नही। फिर देखो तुमको कितना मज़ा आता है सारा मदार है पढ़ाई पर। स्वर्ग के मालिक तो बनेंगी। बाकी पद है पुरुषार्थ पर। बाप कहते है अपन को आत्मा समझ बाबा को याद करने की प्रैक्टिस करो। मैं आत्मा हूँ, शरीर नही। मैं बाबा से वर्सा लेता हूँ। कोई भी तकलीफ नही है। माताओं के लिए तो और ही सहज है। पुरुष लोग तो धन्धे पर चले जाते है। तुम्हारे यह चित्र तो है

झ=